



## International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

# ग्लोबल गांव के देवता उपन्यास में असुर जनजाति समुदाय की दारुण व्यथा का चित्रण

\*<sup>1</sup> कपिल कुमार एवं <sup>2</sup>डॉ. नीलम राणा

<sup>1</sup> शोधार्थी, जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत बागपत, उत्तर प्रदेश, भारत।

<sup>2</sup> शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर, जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत बागपत, उत्तर प्रदेश, भारत।

### Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (QJIF): 8.4

Peer Reviewed Journal

Available online:

[www.alladvancejournal.com](http://www.alladvancejournal.com)

Received: 05/Jan/2026

Accepted: 01/Feb/2026

### \*Corresponding Author

कपिल कुमार

शोधार्थी, जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत बागपत,  
उत्तर प्रदेश, भारत।

### सारांश

कथाकार रणेन्द्र का उपन्यास 'ग्लोबल गाँव के देवता' वस्तुतः आदिवासियों-वनवासियों के जीवन का सन्तप्त सारांश है। शताब्दियों से संस्कृति और सभ्यता की पता नहीं किस छत्री से छन कर अवशिष्ट के रूप में जीवित रहने वाले असुर समुदाय की गाथा पूरी प्रामाणिकता व संवेदनशीलता के साथ रणेन्द्र ने लिखी है। 'अनन्य' और 'अन्य' का विभाजन करनेवाली मानसिकता जाने कब से हावी है। आग और धातु की खोज करनेवाली, धातु पिघलाकर उसे आकार देनेवाली कारीगर असुर जाति को सभ्यता, संस्कृति, मिथक और मनुष्यता सबने मारा है। रणेन्द्र प्रश्न उठाते हैं, 'बदहाल ज़िन्दगी गुज़ारती संस्कृतिविहीन, भाषाविहीन, साहित्यविहीन, धर्मविहीन। शायद मुख्यधारा पूरा निगल जाने में ही विश्वास करती है।... छाती ठोंक ठोंककर अपने को अत्यन्त सहिष्णु और उदार कहनेवाली हिन्दुस्तानी संस्कृति ने असुरों के लिए इतनी भी जगह नहीं छोड़ी थी। वे उनके लिए बस मिथकों में शेष थे। कोई साहित्य नहीं, कोई इतिहास नहीं, कोई अजायबघर नहीं। विनाश की कहानियों के कहीं कोई संकेत मात्र भी नहीं।' 'ग्लोबल गाँव के देवता' असुर समुदाय के अनवरत जीवन संघर्ष का दस्तावेज़ है। देवराज इन्द्र से लेकर ग्लोबल गाँव के व्यापारियों तक फैली शोषण की प्रक्रिया को रणेन्द्र उजागर कर सके हैं। हाशिए के मनुष्यों का सुख-दुख व्यक्त करता यह उपन्यास झारखंड की धरती से उपजा त्वपूर्ण रचना है। असुरों की अपराजेय जिजीविषा और लोलुप-लुटेरी टोली की दुरभिसन्धियों का हृदयग्राही चित्रण।

**मुख्य शब्द:** संतप्त, संवेदनशीलता, बदहाल, अनन्य, सहिष्णु, जिजीविषा

### Introduction

ग्लोबल गाँव का देवता एक उपन्यास है जिसमें भारत के विशेष रूप से झारखंड के एक आदिवासी समुदाय का अपने अस्तित्व, आत्मसम्मान और अस्मिता के रक्षा के लिए लंबे संघर्ष और लगातार मिलते जाने की प्रक्रिया का संवेदनशील चित्रण किया गया है। वह समुदाय है असुर नाम के आदिवासियों का। "असुर" शब्द सुनते ही हिंदी पाठकों की कल्पना में ऐसे लोगों का चित्र उभरता है जो विचित्र, भयानक, मायावी, खूंखार, नरभक्षी और असभ्य हो तथा जिनके नाखून और दांत बहुत बड़े-बड़े हो। असुरों का यह चित्र भारतीय साहित्य में गढ़ी गई और प्रचारित की गई कथाओं तथा धारणाओं की देन है। जो लोग उनके प्रति अपने ऐसे विचार रखते हैं। वैदिक साहित्य से शुरू होकर रामायण, महाभारत और विभिन्न पुराणों में निर्मित असुरों की यह छवि एक और उनके समुदाय और जीवन के दानवीकरण और दूसरी ओर उनके जीवन के यथार्थ के मिथकीकरण का परिणाम है। प्रभुत्वशाली सत्ताएं जिनका विनाश करना चाहती है

उनका पहले दानवीकरण करती है और फिर उन पर हमला करती है बाद में हमने उपन्यास में पढ़ते हुए यह भी पाया कि उनकी जमीन तथा उनके जीवन पर कब्जा भी कर लेती है भारत में यह प्रक्रिया वैदिक काल से लेकर आज तक चल रही है यही प्रक्रिया अमेरिका में कोलंबस के समय से जॉर्ज बुश के समय तक एवं अमेरिका के मूल निवासी रेड इंडियन से आरंभ होकर सद्दाम हुसैन तक चलते हुए दिखाई देती है। दानवीकरण की प्रक्रिया से जुड़ी हुई है मिथकीकरण की प्रक्रिया। मिथकीकरण की प्रक्रिया में कल्पना की मदद से यथार्थ को अयथार्थ बनाया जाता है और इतिहास को रहस्यमय बनाया जाता है। इस छल योजना के सहारे विरोधियों के अस्तित्व की अनिवार्यता को अस्वीकार करना आसान हो जाता है।

दानवीकरण और मिथकीकरण की प्रक्रिया उस बौद्धिक साम्राज्यवाद का हिस्सा है जो भौतिक साम्राज्यवाद के आगे आगे चलता है। आदिवासी समुदायों पर उपन्यास लिखते समय उपन्यासकार का एक काम आदिवासियों के जीवन के यथार्थ को

समग्रता के साथ समझना है तो दूसरा काम उनके बारे में प्रचलित और प्रचारित मिथकों के प्रभाव से मुक्त होकर आदिवासियों के जीवन के इतिहास को व्यक्त करना है। “ग्लोबल गांव के देवता” के लेखक रणेन्द्र ने इन दोनों कामों में बखूबी भूमिका निभाई है। इस उपन्यास के आरंभ में ही लेखक का पहला परिचय एक असुर व्यक्ति से होता है जिसका नाम है लालचंद अशोक उसे सुदर्शन व्यक्ति को देखकर उपन्यासकार चकित हो जाते हैं क्योंकि असुरों के बारे में प्रचलित कथाओं के आधार पर उनके संबंध में जो धारणा लेखक के मन में थी उसके एकदम विपरीत है वह व्यक्ति जो उसके सामने है और वह व्यक्ति मैदान में किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह ही है इसीलिए लेखक सोचता है: “सुना तो था कि यह इलाका असुरों का है, किंतु असुरों के बारे में मेरी धारणा थी कि खूब लंबे चौड़े, काले कलूटे, भयानक दांत वात निकले हुए माथे पर सींग वींग लगे हुए होंगे लेकिन लालचंद को देखकर सब उलट-पुलट हो रहा था।” एक असुर का यह रूप उपन्यास के पाठकों को भी चकित करेगा और असुरों के रूप रंग तथा व्यवहार के बारे में परिचारित धारणा का खंडन भी करेगा।

इस उपन्यास के माध्यम से असुर आदिवासियों का जो इतिहास पाठकों के सामने आता है, वह अपने जंगल जमीन और जीवन को आक्रमण कार्यों से बचने के लिए आदिवासियों के कठिन घटक और कई हजार वर्षों लंबे संघर्ष का इतिहास दोहराता है भारत में जब भी शक्तिशाली सम्राटों और साम्राज्यों का उदय हुआ है तब तब असुरों के जंगल जमीन और जीवन पर सांघातिक आक्रमण हुए हैं। ग्लोबल गांव के देवता का एक पत्र रुमझूम कहता है कि “वैदिक काल के सप्तसिंधु के इलाके से लगातार पीछे हटते हुए आजमगढ़, शाहाबाद, आरा, गया, राजगीर से होते हुए इस वन प्रांतर, पाउंड्रिक कोकराह या छोटानागपुर पहुंचे। हजार सालों में कितने इंद्र देवताओं कितने पांडवों कितने सींगबोंगा ने कितनी बार हमारा विनाश किया है। कितने गढ़ ध्वस्त किए उसकी कोई गणना किसी इतिहास में दर्ज नहीं है केवल लोक कथाओं और मिथकों के रूप में ही हम आज तक जिंदा है। इस उपन्यास से यह भी स्पष्ट होता है कि असुरों से देवताओं का संघर्ष जितना पुराना है उतना ही जटिल भी है। वैदिक साहित्य के सभी जानकार यह मानते हैं कि सुर और असुर पहले एक साथ रहते थे। ऋग्वैदिक के आरंभिक अंशों में असुर भी देवताओं के रूप में वर्णित है। इस उपन्यास में यह भी बात लिखी हुई है कि असुरों ने आग की खोज की, उन्होंने धरती से कच्चा लोहा निकाला और उसे पिघलाकर उसे तरह-तरह के हथियार और औजार बनाने की कुशलता विकसित की इसीलिए उन्हें आर्यों ने मायावी एवं राक्षस कहना शुरू कर दिया। इस उपन्यास से यह भी मालूम होता है कि सप्त सिंधु से खदेड़े जाने के बाद असुर लंबे समय तक इस देश के मैदानी भागों में रहे ही नहीं बल्कि राज भी किया। जैन श्रुतियों और मानव वंश शास्त्रियों के हवाले से उपन्यासकार ने यह लिखा है। आर्यों का संघर्ष केवल वैदिक काल या महाकाव्य तक सीमित नहीं था भारत के इतिहास के एक महान सम्राट थे अशोक। कहा जाता है कि वह पहले जितने खूंखार थे बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद उतने ही अहिंसक और सहनशील बन गए। लेकिन अपने साम्राज्य के विस्तार और समृद्धि के प्रश्न पर उनका भी दृष्टिकोण वही था जो दूसरे सम्राटों का था।

राज्य का जंगलों पर कब्जा, उससे आदिवासियों की तबाही और उस सबका आदिवासियों द्वारा प्रतिरोध ब्रिटिश उपनिवेशवाद के परिवेश में भी जारी था। उपनिवेशवादी सत्ता लोभ और लूट के इरादों से जंगलों को हथियाना और उसका विरोध करने वाले आदिवासियों को दबाने का निरंतर प्रयास करती रही। अंग्रेज अधिकारी आदिवासियों को बदमाश, हिंसक, अर्ध बर्बर अधार्मिक और असभ्य कहते रहे थे। उन्होंने लूट के प्रक्रिया को अधिक व्यापक और विस्तारित बनाने के लिए मैदानी भागों से लोगों को लाकर जंगलों के आसपास बसाना शुरू किया ताकि उनके सहयोग और समर्थन से जंगल के संसाधनों

का शोषण और आदिवासियों का दमन संभव हो सके। इन सब के परिणाम स्वरूप अनेक आदिवासी विद्रोह हुए प्रायः पराजित व्यक्ति समुदाय और समाज विजेताओं की गणना का पात्र होता है, इसीलिए सन 1857 के स्वतंत्रता संग्राम या हम ऐसा कह सकते हैं कि वह महाविद्रोह के दमन के बाद अंग्रेजों ने आदिवासियों के दमन की प्रक्रिया पहले से अधिक उग्र रूप में तीव्र की। सन 1871 में अपराधी जनजाति कानून बना जिसके अनुसार सैकड़ों जनजातीय जन्म से अपराधी मान ली गई और उनके खिलाफ दमन का काम ब्रिटिश सत्ता का कर्तव्य बन गया। आजादी के बाद भारत के केंद्रीय सरकारों ने अंग्रेजों से केवल सत्ता ही नहीं पाई उसके साथ शासन करने का एक भिन्न प्रकार का ढंग में सीखा इसीलिए आदिवासियों का शोषण और दमन पहले की तरह ही आज भी चल रहा है। जिसे हम सरकार के विकासवादी नीतियों में विस्थापित रूप से देखा जा सकता है।

अगर हम वर्तमान संदर्भ की बात करें तो पिछले 20 वर्षों से भूमंडलीकरण के साथ जो धारणाएं भारत में आई हैं उनमें से एक है ग्लोबल गांव की धारणा उसके अनुसार यह माना जा रहा है कि सारा विश्व एक गांव बन गया है। ग्लोबल गांव के रूप में देशी विदेशी का मिश्रित विचारों का विलक्षण नशा पैदा कर रहा है, व्यक्ति और समाज के जीवन के हर एक प्रसंग में देसी विदेशी का फर्क मिटता जा रहा है। लोभ और लूट से संचालित पूंजीवाद के भूमंडलीकरण दौर में भारत के प्रकृति और संपत्ति की लूट की खुली छूट मिली हुई है, प्रायः प्राकृतिक खनिज पदार्थ सबसे अधिक वही है जहां आदिवासी रहते हैं। इसीलिए आदिवासी लोगों की जमीन और जिंदगी खतरे में है आदिवासियों की सबसे बड़ी चिंता यही है कि उनकी जमीन और बेटियां उनसे छीनी जा रही है यह चिंता इस उपन्यास में बार-बार दोहराई गई है।

गौरतलब है कि इस उपन्यास में ग्लोबल गांव के दो देवताओं का उल्लेख किया गया है। पहला है विदेशी वेदांत ग्लोबल गांव का बड़ा देवता, कंपनी है विदेशी, नाम है पर देशी। दूसरा देवता है टाटा, जिसने असुरों के लोहा गलाने और औजार बनाने के हुनर का अंत कर दिया है। इसीलिए असुर मानते हैं कि टाटा कंपनी ने उसका जो विनाश किया है वह असुर जाति के पूरे इतिहास की सबसे बड़ी हार है उपन्यासकार के मूल मान्यता यह है कि असुरों के विरुद्ध “जो लड़ाई वैदिक युग में शुरू हुई थी, हजार हजार इंद्र जिसे अंजाम नहीं दे सके थे ग्लोबल गांव के देवताओं ने वह मुकाम पा लिया है। असुर बिरजिया, बिरहोर, कोरबा आदिम जाति, आदिवासी सब मुख्य धारा में शामिल होने ही वाले हैं मुख्य धारा की लहरें चांद छूने को बताब थी। वह लहराती इठलाती राज्यों की राजधानियां से होती हुई वाया दिल्ली, वॉशिंगटन डीसी की ओर दौड़ी जा रही है। ऐसा इसलिए है कि अब पूंजीवादी वह विश्व व्यवस्था है जिसका केंद्र अमेरिका है। आर्य देवता असुरों की हत्या को अपना धर्म मानते थे, लेकिन ग्लोबल गांव के देवता असुरों और अन्य आदिवासियों को अपने विस्तार के रास्ते पर रोड़ा मानते हैं, इसीलिए उनके अस्तित्व को अनावश्यक समझते हैं। उपन्यास में यह कहा गया है कि जब से भारत में पूंजीवाद का भूमंडलीकरण आया है, तब से पूरे देश के आदिवासी समुदायों को सब कुछ उनकी प्रकृति, संस्कृति और जिंदगी, खतरे में है इसीलिए वे सभी आत्मरक्षा के लिए लड़ रहे हैं इस उपन्यास में छत्तीसगढ़, मणिपुर, केरल, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के आदिवासियों के संघर्ष की ओर संकेत हैं और उन सभी संघर्षों में स्त्रियों के नेतृत्वकारी भूमिका और बहादुरी के प्रति गहरा सम्मान व्यक्त हुआ है। इन आदिवासियों की लड़ाई अपने धरती को बचाने के लड़ाई है इसीलिए लेखक सोचता है कि “धरती भी स्त्री, प्रकृति भी स्त्री, सरना माई भी स्त्री और उसके लिए लड़ाई लड़ती हुई सत्यभामा, इरोम शर्मिला, सी. के. जानू, सुरेखा, दलवी और यहां भौरापाट में बुद्धनी दी और साहिया ललिता भी स्त्री, शायद स्त्री ही स्त्री की व्यथा समझती है। सीता की तरह धरती की बेटियां धरती में सामने को तैयार है।

आज आदिवासी जिस विकराल संकट का सामना कर रहे हैं उसका मूल कारण राष्ट्र राज्य की अपार ताकत और आतंककारी हिंसक प्रवृत्ति है। यद्यपि भूमंडलीकरण की विचारधारा के रूप में जो उत्तर आधुनिकतावाद आया है उसने यह घोषणा की थी कि राष्ट्र राज्य का अंत हो गया है लेकिन वास्तविकता यह है कि भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को सफल बनाने और विरोध करने वाले हर कोशिश को कुचलना के लिए राष्ट्र राज्य कटिबंध है भारत में और सारी दुनिया में “ग्लोबल गांव के देवता” का लेखक यह जानता है, इसीलिए ललिता के माध्यम से वह सोचता है कि राज्य राष्ट्र की हिंसा का कोई जवाब नहीं हो सकता। राज्य की नींव में ही केवल हिंसा की ईंटें नहीं लगी हैं बल्कि उसके महल की भी हिंसा की ईंटों से ही चिनाई हुई है। यही एकमात्र संस्था है जिसने हिंसा को भी सांस्थानिक रूप दिया है। उसकी सेना, सशस्त्र बल, पुलिस सब सैद्धांतिक तौर पर हिंसा के लिए प्रशिक्षित है। राज्य राष्ट्र अपने को सुरक्षित रखने के लिए इंसानों को इंसानों के द्वारा ही नाश करवाता है।

असुर समुदाय में बढ़ती गरीबी और भूख के कारण उस समुदाय की जवान लड़कियों में संपन्न जमींदारों, नौकरशाहों, खदान के मालिकों और प्रभावशाली कारिंदों की रखेलों के रूप में उनके हाथों का खिलौना बनाने का उल्लेख भी इस उपन्यास में दिखाया गया है। इसमें यह भी लिखा हुआ है कि इस स्थिति से असुर समुदाय के लोग चिंतित हैं और बेचैन भी, जिसकी अभिव्यक्ति एक गीत में हुई है: “काठी बेचे गेले असुरीन, बांस बेचे गेले गे, मेट संगे नजर मिलायले, मुंशी संग लासा लगयाले ले, कचिया लाभे कुल दुबाले, रुपया लोभे जात दुबाले गे।

इस गीत में आलोचना है, शिकायत है और विलाप भी है। असुर समाज में स्त्री पुरुष के बीच समानता है और स्त्री अपना सहज जीवन जीने के लिए स्वतंत्र है महिलाएं इस समाज में सियानी कहलाती थीं, सियानी शब्द उनकी समझदारी सयानापन को इंगित करता मालूम होता है। असुर समाज में स्त्री पुरुष के बीच प्रेम का विकसित होना मुख्यधारा की तरह गुनाह नहीं मन जाता बल्कि वह उत्सव का अवसर होता है।

### निष्कर्ष:

संरचना के लिहाज से ग्लोबल गांव के देवता ऐसा उपन्यास है जिसमें आख्यान और विचार विमर्श साथ-साथ चलते हैं। परस्पर गुंथे हुए एक दूसरे का सहयोग करते हुए विमर्श को आख्यान का सहयात्री बनाने की प्रक्रिया यह है कि इतिहास के तथ्यों मिथको के वृत्तांतों और समकालीन जीवन की घटनाओं के बीच से पैदा होने वाले ज्ञान को पाठकों पर लादने के बदले उन सबके निहितार्थों के बारे में नए ढंग से सोने की प्रेरणा कथा देती है। जो लोग समाज में पराधीनता और दमन के शिकार होते हैं उनकी आवाज इतिहास में बहुत कम सुनाई देती है। समाज के अछूत समुदाय समाज से बहिष्कृत होते रहे हैं और वह मुख्य धारा की दृष्टि से इतिहास विहीन जन हैं। ऐसे लोगों के समाज और सांस्कृतिक इतिहास उपन्यास में बखूबी रूप से लिखा गया है। “ग्लोबल गांव का देवता” यह उपन्यास असुर समुदाय के जीवन और संस्कृति के अदृश्य इतिहास की भूली बिसरी पगडंडियों के ज्ञान और उस समुदाय के स्त्री पुरुष की जिंदगी की यात्राओं के प्रति गहरी संवेदनशीलता के ताने-बाने से बना हुआ एक आख्यान है।

### संदर्भ सूची:

1. ग्लोबल गांव का देवता उपन्यास, रणेंद्र सातवां संस्करण 2022 पृष्ठ संख्या 16
2. वही, पृष्ठ संख्या 17
3. वही, पृष्ठ संख्या 23
4. वही, पृष्ठ संख्या 33
5. वही पृष्ठ संख्या 43
6. वही, पृष्ठ संख्या 38
7. वही, पृष्ठ संख्या 92
8. वही, पृष्ठ संख्या 100
9. रणेंद्र के उपन्यास में आदिवासी विमर्श, विनोद विश्वकर्मा प्रलेख प्रकाशन
10. वही, पृष्ठ संख्या 44
11. वही पृष्ठ संख्या 45